Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी टेस्ट-3 (कृपाराम खिड़िया) आदर्श उत्तर कुंजी पूर्णांक 20

प्रश्न 1. "हिम्मत किम्मत होय लिखिए। दोहे के माध्यम से मनुष्य के किस गुण की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर: प्रस्तुत सोरठे में कवि ने हिम्मत के महत्त्व को बताया है। हिम्मत की ही कीमत होती है बिना हिम्मत के व्यक्ति कुछ भी नहीं कर पाता है। जो व्यक्ति हिम्मत और साहस से कार्य करता है उसके सभी कार्य सफल होते हैं। उसे कभी भी असफलता नहीं मिलती है। जो व्यक्ति हिम्मत नहीं रखते हैं उनका जीवन बेकार हो जाता है। कवि के अनुसार ऐसे व्यक्ति का जीवन रद्दी कागज के समान होता है जिस में हिम्मत नहीं होती है। हिम्मत का महत्व केवल मनुष्य के लिए ही नहीं वरन छोटे से छोटे जीव के लिए भी होता है। छोटी सी चींटी भी बड़े-बड़े अन्न के कण दूर दूर तक ले जाती है यह चींटी की हिम्मत का ही परिणाम है। अतः मनुष्य को जीवन में हिम्मत, साहस और उत्साह से प्रत्येक कार्य करना चाहिए।

प्रस्तुत सोरठे में कवि ने मनुष्य के हिम्मत , साहस, उत्साह, वीरता जैसे गुणों की ओर संकेत किया है।

प्रश्न 2. कृपाराम खिड़िया का साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर- राजस्थानी डिंगल भाषा के कवि कृपाराम खिड़िया' नामक शाखा के चारण थे। इनका जन्म सन् 1743 ई. में हुआ। इनके पिता का नाम जगरामजी था। ये खराड़ी गाँव जिला पाली के निवासी थे। सीकर के महाराजा देवांसिंह और उनके पुत्र राव राजालक्ष्मण सिंह ने इनकी काव्य प्रतिभा से प्रभावित होकर इन्हें महाराजपुरा तथा लक्ष्मणपुर गांव की जागीर दे दी। इनकी रचनाओं में 'राजिया रा सोरठा' ही प्राप्त होती है। इस रचना में 140 सोरठे छन्द जो कि इनके सेवक राजाराम राजिया को संबोधित कर लिखे हैं। इसमें सोरठा छंद और वैण सगाई अलंकार हैं। इनकी भाषा में सहजता , सरलता और प्रसाद गुण की विशेषता है। इनकी मृत्यु सन् 1833 ईस्वी में हुई।

प्रश्न 3. कवि कृपाराम ने सच्चे मित्र के क्या लक्षण बताए हैं? सच्ची मित्रता के उदाहरण के रूप में कवि ने किस घटना का उल्लेख किया है? लिखिए।

उत्तर: कवि कृपाराम कहते हैं कि सच्चा मित्र अपने मित्र के हित के लिए सदा तत्पर रहता है। मित्र के कहने पर वह उसका हर कार्य लगन से किया करता है। इस कथन के समर्थन में कवि ने महाभारत के युद्ध में कृष्ण द्वारा अर्जुन का रथ हाँकने की घटना का उल्लेख किया है। कृष्ण ने अपने मित्र की

सहायता के लिए , स्वयं राजाधिराज होते हुए भी , उसका रथ हाँकने का कार्य किया।

प्रश्न 4. सप्रसंग व्याख्या करो (कोई दो)

2×4 = 8

(क)

मुख ऊपर मिठियास, घट माँहि खोटा घडै।
इसड़ां सू इखळास, राखीजै नहिं राजिया॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत सोरठा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'राजिया रा सोरठा ' से लिया है जिसके रचयिता कवि कृपाराम खिड़िया है। कवि अपने सेवक राजिया को उन लोगों से सावधान रहने की सीख दे रहा है जो मुख से तो मीठा बोलते हैं किन्तु हृदय में छल-कपट रखते हैं।

व्याख्या- कवि कहता है कि हे राजिया जो लोग तुम्हारे सामने तो मीठी मीठी बातें करते हैं लेकिन अपने हृदय में तुम्हारे प्रति बैर भाव रखते हैं। ऐसे लोगों से तुम्हें कभी भी अपनत्व का भाव नहीं रखना चाहिए। ऐसे लोग कभी भी धोखा दे सकते हैं। यह लोग 'मुंह में राम बगल में छुरी ' वाली कहावत को चरितार्थ करने वाले होते हैं इसलिए इनसे दूर रहना ही उचित है।

विशेष-

(i) मुँह में राम बगल में छुरी' यह लोकोक्ति इस सोरठे में प्रत्यक्ष हो रही है।

(ii) कवि ने राजिया के माध्यम से सभी को लोकव्यवहार की शिक्षा दी है।

(iii) भाषा मिश्रित शब्दावली युक्त है।

(iv) शैली उपदेशात्मक है।

(ख)

मतलब री मनवार, चुपकै लावै चूरमो।
बिन मतलब मनवार, राबन पावै राजिया॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत सोरठा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'राजिया रा सोरठा ' से लिया है जिसके रचयिता कवि कृपाराम खिड़िया है।कवि ने मतलबी लोगों के मतलब निकलने से पहले तथा मतलब निकलने के बाद के व्यवहार वर्णन किया है।

व्याख्या- कवि अपने सेवक राजिया को संबोधित कर कहता है कि हे राजिया मतलबी लोगों का व्यवहार समय और परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग होता है। जब उन्हें किसी से मतलब होता है या अपना कोई काम करवाना होता है तब वे उनके लिए 'चूरमा' अर्थात उनकी मनचाही वस्तु लाते हैं। उनकी खुशामद करते हैं। लेकिन जब उनका काम निकल जाता है तब भी उन्हें पूछते भी नहीं है और छोटी से छोटी चीज भी नहीं देते हैं ना ही उनसे किसी तरह का मेलजोल रखना चाहते हैं। कवि कहता है कि ये राजिया यह सब मतलब की ही मनुहार होती है मतलब निकल जाने के बाद सद्व्यवहार समाप्त हो जाता है।

विशेष-

(i) कवि अपने पाठकों को सावधान कर रहे हैं कि स्वार्थी लोगों द्वारा खुशामद किए जाने पर सतर्क हो जाना चाहिए और उनके उपहार को सोच-समझकर ही स्वीकार करना चाहिए।

(ii) बड़ी सरल भाषा में कवि ने लोक व्यवहार की सीख दी है।

(iii) शैली उपदेशात्मक तथा व्यंग्यात्मक है।

(ग)

डूँगर जळती लाय, जोवै सारो ही जगत।
पर जळती निज पाय, रती न सुझै राजिया॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत सोरठा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कवि कृपाराम द्वारा रचित सोरठों से लिया गया है। इस सोरठे में कवि उन लोगों पर व्यंग्य कर रहा है जो दूसरों की कलह और विवाद को देखकर आनन्दित हुआ करते हैं।

व्याख्या- कवि अपने सेवक राजिया को सम्बोधित करते हुए कहता है कि दूर पर्वत पर जलती आग को सारा संसार बड़े आनन्द के साथ देखा करता है किन्तु लोगों को अपने पैरों के पास लगी आग तनिक भी दिखाई नहीं देती। भाव यह है कि लोग दूसरों के बीच हो रही कलह और विवाद को देखकर मन ही मन प्रसन्न हुआ करते हैं पर उन्हें अपने ही घर की कलह और विवाद का ध्यान नहीं आता।

विशेष-

(i) कवि का आशय यह है कि दूसरों के दोषों पर दृष्टि डालने से पहले व्यक्ति को अपने भीतर भी झाँक कर देखना चाहिए कि स्वयं उनके भीतर कितने दोष भरे हुए हैं।

(ii) सन्त कबीर का भी यही मत है- जो दिल खोजा आपना, मुझ से बुरा न कोय।

(iii) सरल राजस्थानी भाषा का प्रयोग है।

(iv) शैली व्यंग्यात्मकं और उपदेशात्मक है।

इस प्रश्न-पत्र की
आदर्श उत्तर-कुंजी आप
03:00 बजे बाद इस लिंक
https://tinyurl.com/y66j6z98
से डाउनलोड कर सकते हैं।

कक्षा 12 (अनिवार्य हिन्दी - सृजन) परीक्षा की दृष्टि से सरल व आसान व्याख्या एवं हल प्रश्न उत्तर सहित Free PDF Download इस से कीजिए-
https://tinyurl.com/y6tpcbsp

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg